B.Ed. 1st year 19-21 Date - 29/04/2020

Paper - F2 (सृजनात्मकता) Unit-4

(Creativity)

P-C1 B.Ed 1st year (20-22) Unit 5

* Introduction :- मनुष्य एक बुद्धिमान एवं सामाजिक प्राणी है तथा समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी प्रकार की मानसिक योग्यताएं पायी जाती है। जिसके आधार पर वह विभिन्न क्षेत्रों में अपनी योग्यताओं का प्रदर्शन करता है जैसे - लेखन, कलाकार, वैज्ञानिक तथा संगीतज्ञ इत्यादि।

इसतरह मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में मानव अपनी इसप्रकार के सृजनशील योग्यताओं का प्रयोग का अपने जीवन की आवश्यकताओं को पुरा करते है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जटील समाज में वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों को पाने के लिए सृजनात्मक व्यक्तियों का होना राष्ट्र की प्रमुख आवश्यकता बन गयी है जिससे राष्ट्र, राज्य एवं समाज विकास की ओर अग्रसर हो सके।

* सृजनात्मकता का अर्थ (Meaning of Creativity) :-

सृजनात्मकता शब्द अँग्रेजी के 'क्रिएटिविटी' शब्द का हिन्दी रूपांतरण है। साथ में हम यह भी कह सकते है कि यह शब्द 'सृजन' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है, रचना करना, निर्माण करना या उत्पाद करना। अर्थात सृजन शब्द मानव के योग्यता से संबंधित है जिससे वह विभिन्न वस्तुओं की रचना करता है।

Scanned with CamScanner

अतः सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह ऐसी वस्तुओं या विचारों का उत्पादन करता है जो अनिवार्य रूप से नवीन हो, जिन्हें वह पहले से न जानता हो। इसप्रकार जो व्यक्ति ऐसे नवीन कार्य करते हैं उन्हें सृजनशील या सृजनकर्ता कहा जाता है। व्यक्ति अपने जीवन से जुड़ी विभिन्न क्षेत्रों में जैसे - विज्ञान, तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक, साहित्य, कला, संगीत, कृषि या अन्य कार्यों में नवीन कार्यों को करता है।

* सृजनात्मकता की परिभाषा :-

* क्रो व क्रो के अनुसार :- "सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने का मानसिक प्रक्रिया है।"

* स्टेन के अनुसार :- "सृजनात्मकता वह कार्य है जिसका परिणाम नवीन हो और किसी समय, किसी समूह द्वारा उपयोगी एवं संतोषजनक रूप में स्वीकार किया जाये।"

* स्किनर के अनुसार :- "सृजनात्मक चिन्तन वह है जो नये क्षेत्र की खोज करता है, नये परीक्षण करता है, नई भविष्यवाणियाँ करता है और नये निष्कर्ष निकालता है।"

Scanned with CamScanner

* सृजनात्मकता की विशेषताएँ :-

(i) सृजनात्मकता व्यक्तिगत होती है।
(ii) इसमें मौलिकता एवं नवीनता पाई जाती है।
(iii) सृजनात्मकता के लिए गहरी चिंतन की आवश्यकता होती है।
(iv) सृजनात्मक कार्यों को समाज द्वारा मान्यता प्राप्त होती है।
(v) सृजनात्मक चिंतन व्यक्ति के बुद्धि का परिचायक होता है।
(vi) यह ज्ञान के अर्जन पर आधारित होता है।
(vii) इसमें किसी नये तथा पृथक उत्पादन का मार्ग-निर्देशक होता है।

* सृजनात्मकता के क्षेत्र :-

→ (i) व्यक्तिगत क्षेत्र।
→ (ii) साहित्यिक क्षेत्र।
→ (iii) कला-कौशल का क्षेत्र।
→ (iv) विज्ञान का क्षेत्र।
→ (v) तकनीकी क्षेत्र।
→ (vi) राजनीतिक क्षेत्र।
→ (vii) सामाजिक क्षेत्र।
→ (viii) शैक्षिक क्षेत्र।

इत्यादि।

Scanned with CamScanner

* सृजनात्मकता के विकास की अवस्थायें :-

- (i) विचारों की अवस्था।
- (ii) पुनर्व्यवस्थित करना।
- (iii) अचानक समाधान करना।
- (iv) मूल्यांकन करना।
- (v) दुहराना।

* सृजनात्मकता को विकसित करने हेतु सुझाव :-

- (i) कक्षा में बौद्धिक वातावरण प्रदान करें।
- (ii) प्रजातांत्रिक विद्यालय वातावरण।
- (iii) मौलिकता और लचीलापन को बढ़ावा देना।
- (iv) विद्यालय में भौतिक वातावरण का निर्माण।
- (v) समुदाय में सृजनात्मक संसाधनों का उपयोग।
- (vi) अच्छे उदाहरणों को प्रस्तुतीकरण।
- (vii) शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण।
- (viii) बच्चों में अच्छी आदतों के विकास पर बल देना।
- (ix) पर्याप्त संसाधन।

* सृजनात्मकता का मापन :-

सृजनात्मकता व्यक्ति का रचनात्मक गुण है अतः मनोवैज्ञानिकों ने इसको माप के लिए विभिन्न परीक्षण बनाये हैं —

Scanned with CamScanner

(i) मिनेसोटा सृजनात्मक चिंतन परीक्षण।

(ii) गिलफोर्ड का बहुविध चिंतन उपकरण।

(iii) रिमोट एसोसिएशन परीक्षण।

(iv) वालक तथा कॉरगन का सृजनात्मकता उपकरण।

(v) सृजनात्मक योग्यता का ए० सी० परीक्षण।

(vi) टॉरेन्स का सृजनात्मक चिंतन परीक्षण।

उपरोक्त सभी प्रकार के परीक्षणों में सबसे प्रचलित टॉरेन्स का परीक्षण है। इन्होंने सृजनात्मकता को मापने के लिए 1966 में एक परीक्षण बनाया जो अत्यंत ही लोकप्रिय साबित हुआ। इसके दो भाग हैं शाब्दिक भाग तथा आकृतिक भाग। इन दोनो भागों को भी कई उपभागों में बाँट गया है अब हमलोग यहाँ शाब्दिक भाग को 7 उपभागों में बाँटेंगे।

(i) पूछना तथा अनुमान करना।

(ii) कारण

(iii) उत्पादन उन्नति।

(iv) अनुमानित परिणाम।

(v) असाधारण उपयोग।

Scanned with CamScanner

(vi) असाधारण प्रश्न :-

(vii) मान लिजिए।

इसप्रकार हमलोग इसका सँक्षिप्त वर्णन करेंगे —

(i) पूछना तथा अनुमान करना :- इसमें व्यक्ति को एक तस्वीर या आकृति दी जाती है तथा उसे यह अनुमान लगाने को कहा जाता है कि यह आकृति किस तरह से तथा किन कारकों से बनी है। इस क्रम को पूरा करने में 5 मिनट का समय दिया रहता है।

(ii) कारण :- इस उपभाग की समय सीमा भी 5 मिनट है इसमें एक तस्वीर दी गई है जिसे देखकर एक कहानी लिखनी होती है।

(iii) उत्पादन उन्नति :- इस उपभाग में व्यक्ति को 6 मिनट का समय दिया जाता है। इसी 6 मिनट में व्यक्ति को दिये गये खिलौने से कुछ ऐसा करने का सुझाव देने को कहा जाता है जिससे वह कुछ अजुबा दिखाये।

(iv) अनुमानित परिणाम :- इस उपभाग का समय भी 5 मिनट का होता है जिसमें पूर्व में किये गये अनुमानों का परिणाम निकाला जाता है।

(v) असाधारण उपयोग :- यह उपभाग 10 मिनट का होता है, इसमें व्यक्ति से साधारण वस्तु जैसे टीन आदि के असाधारण उपयोग जो उसके मन में आ सकते है लिखने को कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

(vi) असाधारण प्रश्न → इसमें व्यक्ति को तीन के बच्चे को देखकर जितने प्रश्न आते हैं उन्हें लिखना है।

(vii) मान लीजिए → इसमें व्यक्ति के सामने एक असंभव स्थिति दी जाती है तथा यह पूछा जाता है कि इस असंभव स्थिति के उत्पन्न हो जाने पर क्या होगा।

*आकृति नाम में व्यक्ति की सृजनात्मकता के मापन के लिए तीन उपखंडों का प्रयोग किया जाता है →

- (i) आकृति बनाना
- (ii) आकृति पूर्ण करना।
- (iii) समान्तर रेखा।

(i) आकृति बनाना → इसमें व्यक्ति को एक आकृति बनाना होता है तथा उसका शीर्षक भी लिखना होता है।

(ii) आकृति पूर्ण करना → इसमें 10 मिनट में दस अपूर्ण चित्रों को पूर्ण करना होता है साथ ही उसका शीर्षक भी लिखना होता है।

(iii) सामान्तर रेखा → इसमें दस सामान्य रेखाओं के युग्म दिये जाते हैं जिसे आधार मानकर उसे पूर्ण करना है अथवा आकृति बनानी होती है।

Scanned with CamScanner

* बालक के विभिन्न अवस्थाओं में सृजनात्मक विकास →

- (1) शैशवावस्था में सृजनात्मक विकास।
- (2) बाल्यावस्था में सृजनात्मक विकास।
- (3) किशोरावस्था में सृजनात्मक विकास।

* 1) शैशवावस्था में सृजनात्मक विकास →

(Development of Creativity in Infancy)

सृजनात्मकता उस योग्यता को बताती है, जो किसी वस्तु को खोजने या सृजन से संबंधित होती है। शैशवावस्था में शिशु बहुत कल्पनाशील होता है। वो अपनी कल्पना के आधार पर नई वस्तुओं का सृजन करता है जैसे, कागज की नाव बनाना, कागज पर तरह-तरह के चित्रों पर अपनी कल्पना के आधार पर रंग भरना।

इसतरह शैशवावस्था में बालक अपनी कल्पना शक्ति से सृजनात्मकता को विकसित करने का प्रयास करता है और अपने भावी जीवन का निर्माण करता है जो शिशु के व्यक्तित्व का उचित विकास करते हैं।

(2) बाल्यावस्था में सृजनात्मक विकास →

(Development of Creativity in childhood)

प्रत्येक बच्चे में सृजन की क्षमता जन्मजात होती है, छोटे बच्चों द्वारा तरह-तरह के खेलों में इसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अपनी रचनात्मक कार्यों द्वारा सीखते हैं,

Scanned with CamScanner

DATE : / /20
PAGE :

और आगे बढ़ते है। यदि हम बच्चों को कुछ स्वंय करने का अवसर दें, तो वह आस-पास की वस्तुओं का ज्ञान अपनी ज्ञानेंद्रियों द्वारा प्राप्त कर सकते है तथा अनुभव भी कर सकते है।

इसप्रकार बच्चों के सृजनात्मक शक्ति का विकास हम कई प्रकार की क्रियाओं द्वारा कर सकते हैं जैसे, खेल, कला, नृत्य अभिनय या बेकार की वस्तुओं से सामग्री तैयार करना इत्यादि।

(3) किशोरावस्था में सृजनात्मक विकास :- (Creative Development in Adolescence)

किशोरावस्था परिवर्तन की अवस्था है। इस अवस्था में बालक के अंदर बहुत से शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक परिवर्तन देखने को मिलते है। इस अवस्था में किशोर न तो बच्चा रहता है और न ही प्रौढ़। इस कारण वह वातावरण में अपने को ठीक ढंग से समायोजित नहीं कर पाता। उनमें कल्पनाशीलता की अधिकता होती है, जिस कारण वह सृजनात्मक कार्य करके अपनी कल्पना को यथार्थ का रूप देना चाहता है।

यदि किशोर-किशोरियों की सृजनात्मक क्षमता को उचित वातावरण देकर उसका अधिकतम विकास किया जाये तो वे अपने जीवन में महत्वपूर्ण उपलब्धियों को हासिल कर सकते है तथा अपने को कुण्ठा एवं निराशा से बचा सकते है। जैसे - वाद-विवाद प्रतियोगिता, साहित्यिक गोष्ठियों, नाटक एवं

Scanned with CamScanner

संगीत इत्यादि के साथ - साथ अन्य सामग्री का उपयोग कर कुछ नवीन वस्तुओं को रचना कर अपनी सृजनात्मक क्षमता का विकास कर सकते है तथा भविष्य में कुशल डॉक्टर, इंजीनियर, साहित्यकार शिक्षक या समाज का मार्गदर्शक बनने में सहायता कर सकते है।

निष्कर्ष → निष्कर्ष रूप में सृजनात्मकता से अभिप्राय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नवीन दृष्टिकोण अपनाना है। इसप्रकार सृजनशील व्यक्ति सदैव नये दृष्टिकोण, विचार और व्यवहार अपनाने के लिए तत्पर रहता है जिससे वह समस्या के नवीन समाधान खोजने में सफल रहता है।